Downloaded from www.studiestoday.com

अभिव्यक्ति और माध्यम

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

स्मरणीय बिन्दु

- जनसंचार के आधुनिक साधनों में अखबार पढ़ने के लिए, रेडियो सुनने के लिए टी.वी. देखने के लिए तथा इंटरनेट पढ़ने, सुनने एवं देखने तीनों के लिए प्रयुक्त होता है।
- अखबार को पढ़ने और रुककर उस पर सोचने में एक अलग तरह की संतुष्टि मिलती है, टी. वी. के दृश्य जीवंतता का अहसास कराते हैं, रेडियो सुविधानुसार कहीं भी ले जाया सकता है और इंटरनेट सूचनाओं के विशाल भंडार का अद्भुत माध्यम है। यही कारण है कि अलग-अलग माध्यम होने के बावजूद इनमें से कोई भी समाप्त नहीं हुआ और इन सभी माध्यमों का लगातार विस्तार और विकास हो रहा है।
- **प्रमुख जनसंचार माध्यम :-** मुद्रित (प्रिंट), रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट
- **मुद्रित(प्रिंट) माध्यम-** आधुनिक जनसंचार माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम है। मुद्रण की शुरुआत चीन से हुई लेकिन आज हम जिस छापेखाने को देखते हैं, इसका आविष्कार जर्मनी के गुटेनबर्ग ने किया। भारत में पहला छापाखाना सन् 1556 में गोवा में मिशनरियों ने धर्म प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था। मुद्रित माध्यम के अंतर्गत अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि आती हैं।
- **मुद्रित (प्रिंट) माध्यम की खूबियाँ-** लिखे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है, दोबारा पढ़ने की सुविधा है, रुचि अनुसार खबर को पहले या बाद में पढ़ सकते हैं, लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं, चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है। लिखित भाषा का विस्तार है। **खामियाँ-** केवल साक्षरों के लिए, तुरंत घटी घटनाओं का प्रकाशन असंभव, सीमित शब्द सीमा एवं स्थान, प्रकाशन के पश्चात सुधार संभव नहीं।
- मुद्रित (प्रिंट) माध्यम में लेखन के लिए कई बातों पर विशेष ध्यान देना पड़ता है- भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान, प्रचलित भाषा का प्रयोग, समय सीमा एवं शब्दसीमा का ध्यान, अशुद्धियों को शुद्ध करना एवं लेखन में सहज प्रवाह के लिए तारतम्यता बनाए रखना।
- **रेडियो** - श्रव्य माध्यम है। इसमें सब कुछ ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल है। रेडियो श्रोताओं द्वारा संचालित माध्यम माना जाता है इसलिए इसमें श्रोताओं का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

रेडियो मूलतः एक रेखीय माध्यम है। इसी आधार पर रेडियो समाचार बुलेटिन का स्वरूप, ढांचा और शैली तय होती है।

- रेडियो संचार का सुलभ एवं सस्ता माध्यम है, इसे कहीं भी ले जाया सकता है, निरक्षर एवं दृष्टिविहीन भी इसका लाभ उठा सकते हैं। रेडियो में अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं है बुलेटिन प्रसारण के समय का इंतजार करना पड़ता है। रेडियो में भ्रामक और अरुचिकर बुलेटिन को बंद किया जा सकता है।
- **रेडियो समाचार की संरचना**– रेडियो समाचार की संरचना उलटा पिरामिड शैली पर आधारित होती है जिसमें समाचार को तीन हिस्सों में बाँटा जाता है– 1. इंट्रो/मुखड़ा (खबर का मुख्य हिस्सा), 2. बॉडी– (घटते महत्वक्रम में समाचार लिखना), 3. समापन (प्रासंगिक तथ्य और सूचनाएँ)

उल्टा पिरामिड शैली

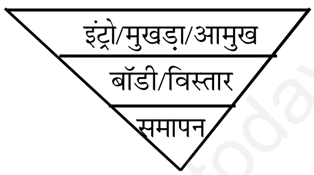

- **रेडियो समाचार लेखन की बुनियादी बातें**– साफ–सुथरी टाइप्ड कॉपी, उच्चारण में जटिल शब्दों का प्रयोग नहीं, अंकों को बोलने की सुविधा के लिए शब्दों में लिखें, संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग में सावधानी।
- **टेलीविजन**– देखने और सुनने का माध्यम है। इसमें दृश्यों की अहमियत सबसे ज्यादा है इसलिए टी.वी समाचार लेखन की बुनियादी शर्त दृश्य के साथ लेखन है। टेलीविजन के लिए लेखन में कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा खबर बताने की कला का इस्तेमाल किया जाता है।
  खूबियाँ – देखने एवं सुनने दोनों की सुविधा, जीवंतता, समाचारों का लगातार प्रसारण, तुरंत घटी घटनाओं की जानकारी, प्रभावशाली।
- **कमियाँ** – भाषा–शैली के स्तर पर अत्यंत सावधानी, बाइट का ध्यान रखना आवश्यक है, कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कभी–कभी सामाजिक उत्तेजना को भी जन्म दे सकता है, अपरिपक्व बुद्धि पर विपरीत प्रभाव संभव।
- **टी.वी. खबरों के विभिन्न चरण**– टी. वी. चैनल पर खबर देने का मूल आधार सूचना देना होता है। यह सूचना विभिन्न चरणों से गुजर कर दर्शक तक पहुँचती है। फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज, ड्राई एंकर, फोन–इन, एंकर–विजुअल, एंकर–बाइट, लाइव एंकर–पैकेज।
- रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा–शैली समाज के सभी वर्गों एवं स्तरों के अनुरूप होनी चाहिए। भाषा सरल एवं वाक्य छोटे हो। गैरजरूरी विशेषणों, कठिन शब्दों मुहावरों एवं भ्रामक शब्दों के स्थान पर सरल एवं आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग हो। भाषा में प्रवाह हो, भाषा के स्तर एवं गरिम का ध्यान आवश्यक है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- **इंटरनेट-** इंटरनेट ऐसा माध्यम है जिसका प्रयोग सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान प्रदान के लिए किया जा सकता है। समाचारों के संकलन, सत्यापन और पुष्टिकरण में इसका विशेष योगदान है।
- इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान ही इंटरनेट पत्रकारिता है। इसे वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है। विश्वस्तर पर इंटरनेट का प्रथम दौर 1982-1992, द्वितीय दौर 1993-2001 और 2002 से अब तक तृतीय दौर चल रहा है।
- भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर चल रहा है पहला दौर 1993 से तथा दूसरा 2002 से प्रारंभ माना जाता है। नई वेबभाषा- एचटीएमएल (हाईपर टेक्स्ट मार्क्डआप लैंग्वेज)।
- वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम, को जाता है। भारत की पहली साइट रीडिफ को माना जाता है। पत्रकारिता के लिहाज से एनडी. टी.वी., पायनियर, आजतक, टाइम्स ऑफ इंडिया, आईबीएन इत्यादि नियमित अपडेट होने वाली बेहतर साइट है।
- हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' से प्रारंभ हुई। इंदौर के नयी दुनिया समूह से प्रारंभ हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। जागरण, अमर उजाला, नयी दुनिया, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स आदि के वेब संस्करण उपलब्ध है। प्रभासाक्षी अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बी.बी.सी. है।
- हिंदी वेब जगत में कई पत्रिकाएँ- अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, सराय आदि चल रही हैं। हिंदी वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या हिंदी फौंट की है। जब तक हिंदी 'की-बोर्ड' का मानकीकरण नहीं होता तब तक यह समस्या बनी रहेगी।
- इंटरनेट के माध्यम से एक सेकेण्ड में 56 किलोवाट यानी लगभग 70 हजार शब्द भेजे जा सकते हैं।

अभ्यास-कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न (1 अंक)

1. जनसंचार के प्रमुख साधन कौन-कौन से हैं?
2. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन सा है?
3. मुद्रण की शुरुआत किस देश से हुई?
4. छापाखाना (प्रेस) का आविष्कार किसने किया?
5. भारत में पहला छापाखाना कब और कहां खुला?
6. भारत में 'छापाखाना' किसने और क्यों खोला?
7. मुद्रित माध्यम के अंतर्गत क्या-क्या आता है?
8. मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी विशेषता क्या है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

9. रेडियो समाचार की संरचना किस शैली में होती है?
10. समाचार कॉपी लेखन की कोई दो विशेषताएं बताइए?
11. टी.वी. के लिए खबर लिखने की बुनियादी शर्त क्या है?
12. टी.वी. खबरों के प्रमुख चरण कौन-कौन से हैं?
13. फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज से क्या तात्पर्य है?
14. 'एंकर पैकेज' क्या है?
15. टी.वी. के संदर्भ में 'नेट साउंड' से क्या अभिप्राय है?
16. दूरदर्शन समाचार वाचक के तीन गुण बताइए।
17. रेडियों एवं टेलीविजन समाचार की भाषा कैसी होनी चाहिए?
18. इंटरनेट पत्रकारिता क्या है?
19. इंटरनेट पत्रकारिता के दो अन्य नाम बताइए।
20. नई वेबभाषा 'एचटीएमएल' का क्या अर्थ है?
21. इंटरनेट पत्रकारिता के लोकप्रिय होने का क्या कारण है?
22. इंटरनेट पत्रकारिता की दो नियमित अपडेट साइट के नाम लिखिए।
23. भारत की पहली पत्रकारिता साइट किसे माना जाता है?
24. वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किस साइट को जाता है?
25. हिंदी का संपूर्ण पोर्टल किसे माना जाता है?
26. हिंदी के किन्हीं चार अखबारों के नाम लिखिए जिनके वेब संस्करण उपलब्ध हैं।
27. कौन-सा अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ नेट पर उपलब्ध है?
28. आज पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट कौन सी है?
29. वेब में प्रकाशित किन्हीं दो साहित्यिक पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
30. हिंद वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (5 अंक)

1. श्रोताओं और पाठकों को बाँधकर रखने की दृष्टि से जनसंचार का कौन-सा माध्यम सर्वाधिक सक्षम है? स्पष्ट कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन सा है? इसकी खूबियां और खामियां बताइए।
3. जनसंचार के एक प्रमुख साधन के रूप में रेडियो की भूमिका स्पष्ट करते हुए रेडियो समाचार की संरचना पर प्रकाश डालिए।
4. रेडियो के लिए समाचार लिखते समय किन-किन बुनियादी बातों पर ध्यान देना चाहिए?
5. जनसंचार के माध्यम के रूप में टेलीविजन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट कीजिए कि टी.वी. पर प्रसारित समाचार किन-किन चरणों से गुजर कर दर्शकों तक पहुंचते हैं?
6. रेडियो एवं टेलीविजन समाचार लेखन की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?
7. इंटरनेट पत्रकारिता के स्वरूप एवं इतिहास पर प्रकाश डालिए।
8. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए 'हिंदी नेट' संसार का परिचय दीजिए।
9. 'इंटरनेट पत्रकारिता सूचनाओं को तत्काल उपलब्ध कराता है, परंतु इसके साथ इसके दुष्परिणाम भी हैं'' स्पष्ट कीजिए।
10. दूरदर्शन, इंटरनेट एवं प्रिंट माध्यम की विशेषताओं की तुलना कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. सिद्ध कीजिए कि संचार माध्यम जनता को जागरुक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
2. 'संचार वस्तुत: एक दुधारी अस्त्र है जिसका उपयोग बड़ी सावधानी से होना चाहिए।'' इस कथन पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पत्रकारिता लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

स्मरणीय बिन्दु

- लोकतंत्र में अखबार एक पहरेदार, शिक्षक और जनमत निर्माण का कार्य करते हैं। अखबार पाठकों को सूचना देने, जागरूक और शिक्षित बनाने, उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। पत्रकार इस दायित्व की पूर्ति के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

- पत्रकारीय लेखन एवं सृजनात्मक साहित्यिक लेखन एक दूसरे से भिन्न हैं। पत्रकारीय लेखन का संबंध समसामयिक और वास्तविक घटनाओं और मुद्दों से है जबकि साहित्यिक सृजनात्मक लेखन कल्पना को भी स्थान देता है। पत्रकारीय लेखन अनिवार्य रूप से तात्कालिक और अपने पाठकों की रुचियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाता है जबकि साहित्यिक सृजनात्मक लेखन में लेखक को काफी छूट होती है। पत्रकारिता के विकास में जिज्ञासा का मूलभाव सक्रिय होता है।

- अच्छे लेखन के लिए कई बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसे- सीधी, सरल एवं प्रभावी भाषा का प्रयोग, गूढ़ से गूढ़ विषय की प्रस्तुति सरल, सहज और रोचक हो, विषय तथ्यों द्वारा पुष्ट हो, लेख उद्देश्य पूर्व हो।

- **पत्रकार के प्रकार** - 1. पूर्णकालिक (किसी समाचार संगठन के नियमित वेतनभोगी), 2-अंशकालिक (एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाले), 3. फ्रीलांसर (स्वतंत्र पत्रकार जो भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखे।

- किसी भी समाचार को लिखते हुए मुख्यत: छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है क्या हुआ? किसके साथ हुआ? कहां हुआ? कब हुआ? कैसे और क्यों हुआ? इन्हीं छह प्रश्नों को समाचार लेखन के छह ककार कहा जाता है। क्या, कौन, कब, कहां इंट्रो में, कैसे और क्यों बॉडी में तथा तथ्य और स्रोत समापन में होते हैं।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

समाचार लेखन के छह प्रकार

मुखड़ा/आमुख – क्या, कौन, कब, कहाँ

बॉडी/विस्तार – कैसें, क्यों

समापन – तथ्य, स्रोत

- **फ़ीचर**– फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्‌देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से मनोरंजन करना होता है। फ़ीचर लेखन की शैली काफी हद तक कथात्मक शैली की तरह होती है। आकार रिपोर्ट से बड़ा होता है। एक अच्छे और रोचक फ़ीचर के साथ फोटो, रेखांकन, आदि का होना जरूरी है। हलके–फुलके विषयों से लेकर गंभीर विषयों और मुद्‌दों पर भी फीचर लिखा जा सकता है।

- **फ़ीचर लेखन में ध्यान देने योग्य बातें**– पात्रों की मौजुदगी जरूरी है, प्रस्तुति ऐसी हो कि पाठक महसूस करें कि वह खुद देख और सुन रहा है, फ़ीचर की थीम सूचनाओं तथ्यों और विचारों से गुंथी होनी चाहिए। फ़ीचर में समाचार की तरह शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। अखबारों और पत्रिकाओं में 250 से 2000 शब्दों तक के फीचर होते है। फ़ीचर सारगर्भित होते हुए भी बोझिल नही होते। फीचर अतीत, वर्तमान और भविष्य से संबंद्ध हो सकता है। किसी भी महत्वपूर्ण खोज, उपलब्धि तथा उसके महत्व को भी फ़ीचर के माध्यम से समझाया जा सकता है। फ़ीचर का प्रारंभ आकर्षक एवं उत्सुकता पैदा करने वाला होना चाहिए प्रारंभ, मध्य और अंत स्वाभाविक तरीके से एक साथ बंधा हो, पैराग्राफ छोटे हों तथा एक पेराग्राफ में एक पहलू पर ही फोकस हो।

- **फ़ीचर के प्रकार** – समाचार बैकग्राउंड फ़ीचर, खोजपरक फ़ीचर, साक्षात्कार फ़ीचर, जीवन–शैली फ़ीचर, रूपात्मक फ़ीचर, व्यक्तिचित्र फ़ीचर, यात्रा फ़ीचर, विशेष कार्य फ़ीचर इत्यादि।

- **विशेष रिपोर्ट**– समाचार पत्र और पत्रिकाओं में गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर जो रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है उसे विशेष रिपोर्ट कहते हैं। विशेष रिपोर्ट कई प्रकार की होती है। 1. **खोजी रिपोर्ट** – पत्रकार ऐसी सूचनाओं और तथ्यों को छानबीन करके जनता के समक्ष लाता है जो पहले सार्वजनिक न हों। 2. **इन–डेप्थ रिपोर्ट** – सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों, सूचनाओं और आंकड़ों की गहरी छानबीन कर महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है। 3. **विश्लेषणात्मक रिपोर्ट** – घटना या समस्या से जुड़े तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या 4. **विवरणात्मक रिपोर्ट** – समस्या का विस्तृत और बारीक विवरण

  आमतौर पर विशेष रिपोर्ट को उलटा पिरामिड शैली में ही लिखा जाता है लेकिन विषयानुसार फ़ीचर शैली का भी प्रयोग होता है। रिपोर्ट बड़ी हो तो उसे श्रृंखलाबद्ध कर कई किस्तों में छापा जाता है। विशेष रिपोर्ट की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की होनी चाहिए।

- **विचारपरक लेखन**– अखबारों में संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय अग्रलेख, लेख और टिप्पणियां विचारपरक लेखन की श्रेणी में आते हैं। संपादकीय को अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष के विचार नहीं होते। संपादकीय लेखन

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

का दायित्व संपादक और उसके सहयोगियों पर होता है। संपादकीय के जरिये अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करता है।

- **स्तंभ लेखन**– कुछ लेखक अपने वैचारिक रुझान एवं आकर्षक लेखन शैली के लिए पहचाने जाते हैं। लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने का जिम्मा देता है। स्तंभ का विषय चुनने एवं उसमें अपने विचार व्यक्त करने की लेखक को पूर्ण छूट होती है। कुछ स्तंभ इतने लोकप्रिय होते हैं कि वह लेखक के नाम से ही जाने पहचाने जाते हैं।

- **संपादक के नाम पत्र**– यह स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है। यह अखबार का एक स्थायी स्तंभ है जिसके जरिये पाठक विभिन्न मुद्दों पर न सिर्फ अपनी राय प्रकट करते हैं अपितु जन समस्याओं को भी उठाते हैं।

- **लेख**–संपादकीय पृष्ठ पर वरिष्ठ पत्रकार और विषय विशेषज्ञ किसी विषय पर विस्तार से चर्चा करते हैं। इसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है लेकिन ये विचार तथ्यों पर आधारित होते हैं और लेखक अपने तर्कों के जरिये अपनी राय प्रस्तुत करता है।

- **साक्षात्कार (इंटरव्यू)** – पत्रकार साक्षात्कार के माध्यम से ही समाचार, फीचर विशेष रिपोर्ट और अन्य पत्रकारीय लेखन के लिए सामग्री एकत्रित करता है। साक्षात्मकार का एक स्पष्ट मकसद और ढांचा होता है। एक सफल साक्षात्कार के लिए न केवल ज्ञान पर्याप्त है अपितु संवेदनशीलता, कूटनीति, धैर्य और साहस जैसे गुण भी होने चाहिए। साक्षात्कार को सवाल–जवाब अथवा एक आलेख की तरह से भी लिख सकते हैं।

अभ्यास-कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न (1 अंक)

1. पत्रकारीय लेखन क्या है?
2. लोकतांत्रिक समाज में अखबार कौन सी भूमिका निभाते हैं?
3. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?
4. पत्रकारिता के विकास में कौन–सा मूलभाव सक्रिय रहता है?
5. पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक–सृजनात्मक लेखन में क्या अंतर है?
6. पत्रकारीय लेखन की भाषा–शैली कैसी होनी चाहिए?
7. उलटा पिरामिड शैली से क्या तात्पर्य है?
8. समाचार लेखन के छह ककार से आप क्या समझते हैं?
9. अच्छे लेखन के लिए ध्यान देने योग्य कोई दो बातें बताइए?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

10. फ़ीचर से आप क्या समझते हैं?
11. फ़ीचर कितने प्रकार के हो सकते हैं?
12. फ़ीचर लेखन की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?
13. फ़ीचर को कैसे रोचक बनाया जा सकता है?
14. विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं?
15. विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है? उनके नाम लिखिए।
16. खोजी रिपोर्ट और इनडेप्थ रिपोर्ट में क्या अंतर है?
17. विश्लेषणात्मक रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं?
18. विचारपरक लेखन के अंतर्गत कौन-सी सामग्री आती है?
19. संपादकीय लेखन क्या है?
20. स्तंभ लेखन की क्या विशेषता है?
21. संपादक के नाम पत्र कौन और क्यों लिखता है?
22. समाचार माध्यमों में साक्षात्कार क्यों महत्वपूर्ण है?
23. एक सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्ता में कौन से गुण होने आवश्यक हैं?
24. साक्षात्कार को लिखने की कौन सी शैली है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (5 अंक)

1. पत्रकारीय लेखन क्या है? स्पष्ट कीजिए।
2. पत्रकारीय लेखन एवं साहित्यिक सृजनात्मक लेखन में क्या अंतर है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. अच्छे लेखन के लिए किन-किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है।
4. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं? स्पष्ट कीजिए।
5. समाचार लेखन के छह ककारों को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।
6. फ़ीचर से क्या अभिप्राय है? फ़ीचर कितने प्रकार के होते हैं?
7. फ़ीचर का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
8. फ़ीचर लिखते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

9. विशेष रिपोर्ट से आप क्या समझते है? विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती हैं? स्पष्ट कीजिए।
10. टिप्पणी लिखिए- (क) स्तंभ लेखन, (ख) संपादक के नाम पत्र, (ग) लेख, (घ) संपादकीय।
11. एक अच्छे एवं सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्ता को किन-किन बातों पर ध्याना देना चाहिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. 'कन्या भ्रूण हत्या' विषय पर एक लेख लिखिए।
2. 'आप शैक्षिक भ्रमण हेतु किसी ऐतिहासिक नगर में गए हैं।'' इस आधार पर एक यात्रा फीचर तैयार कीजिए।
3. अपने पंसदीदा किसी अध्यापक/ अभिनेता अथवा खिलाड़ी के साक्षात्कार हेतु 10 प्रश्न तैयार कीजिए।
4. 'बढ़ते भ्रष्टाचार' के संदर्भ में संपादक के नाम एक पत्र लिखिए।

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

विशेष लेखन-स्वरूप और प्रकार

स्मरणीय बिन्दु

- एक समाचार पत्र या पत्रिका तभी संपूर्ण लगती है जब उसमें विभिन्न विषयों और क्षेत्रों के बारे में घटने वाली घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों के बारे में नियमित रूप से जानकारी दी जाए। इससे समाचार पत्रों में एक विविधता आती है और उसका कलेवर व्यापक होता है। इसलिए पाठकों की रुचियों को ध्यान में रखकर समाचार पत्र सामान्य समाचारों के अलावा साहित्य, विज्ञान, खेल इत्यादि विषयों की भी निरंतर और पर्याप्त जानकारी देते हैं।

- **विशेष लेखन**– यानी किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। समाचार पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो और टी.वी. में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है जिनसे अपेक्षा की जाती है कि संबंधित विषय या क्षेत्र में उनकी विशेषज्ञता होगी। विशेष लेखन के कई क्षेत्र हैं जैसे- अर्थ-व्यापार, खेल, मनोरंजन, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, पर्यावरण, रक्षा, कानून, स्वास्थ्य इत्यादिं

- **बीट**– संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ यह है कि वह आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार और जवाबदेह भी है।

- विशेष लेखन केवल बीट रिपोर्टिंग नही है। यह बीट रिपोर्टिंग से आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है जिसमें न सिर्फ़ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसकी रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी पूरा अधिकार होना आवश्यक है।

- **बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर**– बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र की जानकारी और रुचि होना ही पर्याप्त है और उसे सामान्य तौर पर सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं का बारीकी से विश्लेषण कर पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना होता है। यही कारण है कि बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता और विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहते हैं।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा विषय विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ भी आते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में विशेष लेख लिखने वाले सामान्यतः पेशेवर पत्रकार न होकर विषय विशेषज्ञ होते हैं। जैसे खेल के क्षेत्र में हर्ष भोगले, जसदेव सिंह और नरोत्तमपुरी आदि का नाम प्रसिद्ध है।

- **विशेष लेखन की भाषा शैली**- विशेष लेखन में हर क्षेत्र की विशेष तकनीकी शब्दावली का प्रयोग किया जाता है। जैसे- कारोबार और व्यापार में तेजड़िए, मंदड़िए, सोना उछला, चांदी लुढ़की, जैसे शब्दों का प्रयोग होता है, पर्यावरण से संबंधित लेख में आद्रता, टॉक्सिक कचरा, ग्लोबल वार्मिंग जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती विषयानुसार उलटा पिरामिड अथवा फीचर शैली या अन्य शैली का प्रयोग हो सकता है। विशेष लेख का पाठक वर्ग भी विशेष होता है अतः लेखक की कोशिश होनी चाहिए कि वह पाठक को विषय के बारे में ज्यादा विस्तार और गहराई से बताए। चाहे कोई भी शैली अपनाएं लेकिन मूल बात यह है कि किसी खास विषय में लिखा गया आलेख सामान्य से अलग होना ही चाहिए।

- सामान्य व्यक्ति कुछ भी खरीदता है, बैंक में जमा करता है या कोई आर्थिक योजना बनाता है तो उसका संबंध कारोबार या अर्थ जगत से होता है इसलिए अगर अखबार में आर्थिक पृष्ठ न हो तो उसे पूर्ण नही माना जाता है। इसी तरह खेल विशेषांक, खेल परिशिष्ठ भी महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि खेल पत्रकार अपनी भाषा-शैली से न केवल सूचनाएं देता है बल्कि ऊर्जा, जोश, रोमांच और उत्साह का संचार भी करता है।

- **विशेषज्ञता का अभिप्राय**- व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि सूचनाओं की सहजता से व्याख्या कर पाठकों को उसके मायने समझा सकें। विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए स्वयं का अपडेट रहना, पुस्तकें पढ़ना, शब्दकोश एवं इनसाइक्लोपीडिया का सहारा लेना, सरकारी-गैरसरकारी संगठनों से संपर्क, निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता आवश्यक है।

- पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक पत्रकारिता का महत्व काफी बढ़ा है क्योंकि देश की राजनीति और अर्थव्यवस्था के बीच रिश्ता गहरा हुआ है। आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारित की तुलना में काफी जटिल होती है क्योंकि आम लोगों को इसकी शब्दावाली का मतलब नहीं पता होता। आर्थिक पत्रकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि वह किस प्रकार सामान्य पाठक और जानकार पाठक दोनों को भलींभांति संतुष्ट कर सकता है। हमारा पाठक, दर्शक या श्रोता कौन है? हमारी बात उस तक पहुंच रही है या नहीं, तथ्यों और तर्कों में तालमेल है या नहीं ये तमाम बातें किसी भी लेखन को विशिष्टता प्रदान करती हैं।

अभ्यास-कार्य

लघूरात्मक प्रश्न (1 अंक)

1 विशेष लेखन क्या है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. मुद्रित माध्यम, रेडियो और टी.वी. में अलग 'डेस्क' की व्यवस्था किसके लिए होती है?
3. 'बीट' से आप क्या समझते हैं?
4. 'बीट' रिपोर्टिंग एवं 'विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या मूलभूत अंतर है।
5. विशेष संवाददाता किसे कहते हैं?
6. बीट कवर करने वाले को क्या कहा जाता है?
7. अखबारों में विशेष लेख लिखने वाले कौन होते हैं?
8. किन्हीं तीन खेल विशेषज्ञों के नाम लिखिए।
9. विशेष लेखन की भाषा शैली की एक विशेषता बताइए।
10. विशेष लेखन के अंतर्गत आने वाले किन्हीं चार क्षेत्रों के नाम लिखिए।
11. 'व्यापार-कारोबार' से संबंधित भाषा के दो उदाहरण लिखिए।
12. वर्तमान समय में किस क्षेत्र में विशेष लेखन को प्राथमिकता दी जा रही है?
13. पत्रकारीय विशेषज्ञता से क्या अभिप्राय है?
14. 'खेल समाचार' की भाषा का एक उदाहरण दीजिए।
15. लेखन के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए क्या आवश्यक है?
16. सामान्य पत्रकारिता की तुलना में कौन सी पत्रकारिता जटिल है?
17. आर्थिक पत्रकार को विशेष रूप से किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
18. कौन सी मुख्य बात किसी भी लेखन को विशिष्ट बनाती है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (5 अंक)

1. विशेष लेखन से आप क्या समझते हैं? विशेष लेखन के अंतर्गत कौन-कौन से क्षेत्र आते हैं?
2. सिद्ध कीजिए कि विशेष लेखन के पाठक और भाषा शैली दोनो विशेष होते हैं?
3. बीट रिपोर्टिंग एवं विशेषीकृत रिपोर्टिंग के अंतर को स्पष्ट कीजिए।
4. विशेष लेखन के क्षेत्र में विशेषज्ञता किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है?
5. कारोबार और व्यापार (आर्थिक) से संबंधित पृष्ठ न होने पर किसी भी सामाचार पत्र को अपूर्ण क्यों माना जाता है?
6. समाचार पत्रों में 'खेल समाचार' की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

1. सिद्ध कीजिए कि "आर्थिक पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में कठिन है।"
2. 'वसंत और परीक्षा का बदलता स्वरूप' विषय पर एक आलेख लिखिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सृजनात्मक लेखन कैसे बनती है कविता

स्मरणीय बिन्दु

- वाचिक परंपरा से जन्मी कविता आज लिखित रूप में मौजूद है। पारंपरिक लोरियों, मांगलिक गीतों, श्रमिकों द्वारा गुनगुनाए लोकगीतों ओर तुकबंदी में कविता के स्वर मुखरित होते हैं। कविता लेखन के संबंध में दो मत मिलते हैं।एक का मानना है कि अन्य कलाओं की तरह कविता लेखन की कला को प्रशिक्षण द्वारा नहीं सिखाया जा सकता क्योंकि इसका संबंध मानवीय संवेदनाओं से है जबकि दूसरा मत कहता है कि अन्य कलाओं की भांति प्रशिक्षण के द्वारा कविता लेखन को भी सरल बनाया जा सकता है।
- कविता का पहला उपकरण शब्द है। कवि डब्ल्यू.एच. ऑर्डेन ने कहा कि 'प्ले विद द वर्ड्स' अर्थात कविता लेखन में सबसे पहले शब्दों से खेलना सीखें, उनके अर्थ की परतों को खोलें क्योंकि शब्द ही भावनाओं और संवेदनाओं को आकार देते हैं।
- बिंब और छंद (आंतरिक लय) कविता को इंद्रियों से पकड़ने में सहायक होते हैं। बाह्य संवेदनाएं मन के स्तर पर बिंब के रूप में बदल जाती हैं। छंद के अनुशासन की जानकारी के बिना आंतरिक लय का निर्वाह असंभव है। कविता की भाषा, बिंब, छंद, संरचना सभी परिवेश के इर्द-गिर्द घूमते हैं इसलिए वातावरण, परिवेश और संदर्भ के अनुसार ही भाषा, बिंब और छंद का चयन किया जाता है।
- **कविता लेखन के मुख्य घटक-** भाषा का सम्यक ज्ञान, शब्द विन्यास, काव्य शैलियों का ज्ञान, छंद विषयक बुनयादी जानकारी, समय विशेष की प्रचलित प्रवृत्तियों का ज्ञान, कम से कम शब्दों में अपनी बात करने की क्षमता आदि। नवीन दृष्टिकोण और प्रस्तुतिकरण की कला न हो तो कविता लेखन संभव ही नहीं है। प्रतिभा को किसी नियम या सिद्धांत द्वारा पैदा नहीं किया जा सकता किंतु परिश्रम और अभ्यास से विकसित किया जा सकता है। कविता लेखन के यह घटक कविता लिखना भले ही न सिखाएं पर कविता की सराहना एवं कविता विषयक ज्ञान देने में सहायक है। शब्दों के साथ खेलना और उनकी तह तक जाने की प्रवृत्ति विद्यार्थी की रचनात्मक शक्ति और ऊर्जा को बाहर लाने में अद्भुत भूमिका निभा सकते हैं।

अभ्यास-कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. कविता से आप क्या समझते हैं?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. कविता लेखन को अन्य कलाओं की तरह सिखाया क्यों नहीं जा सकता?
3. 'कविता लेखन' का सबसे पहला उपकरण किसे माना जाता है?
4. 'प्ले विद वर्ड्स' से क्या अभिप्राय है?
5. बिंब किस प्रकार कविता के अर्थ में सहायक होते हैं?
6. कविता के संदर्भ में वातावरण और परिवेश का क्या महत्व है?
7. कविता के लिए आवश्यक कोई दो घटक बताइए।
8. विद्यार्थी की रचनात्मक शक्ति और ऊर्जा को कैसे बाहर लाया जा सकता है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कविता कैसे बनी? कविता-लेखन से संबंधित दो भिन्न मत क्या हैं?
2. कविता लेखन से शब्दों के महत्व पर प्रकाश डालिए।
3. कविता लेखन में छंदों एवं बिंबों की भूमिका स्पष्ट कीजिए
4. कविता लेखन के लिए आवश्यक प्रमुख घटकों का वर्णन कीजिए।
5. आपने जीवन में घटी ऐसी घटना जिसने आपके मन को स्पर्श किया हो उस अनुभूति को कविता में ढालने का प्रयास कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

नाटक लिखने का व्याकरण

स्मरणीय बिन्दु

- भारतीय परंपरा में नाटक को दृश्यकाव्य की संज्ञा दी गई है। नाटक साहित्य की वह विधा है जिसे पढ़ने, सुनने के साथ देखा भी जा सकता है। साहित्य की अन्य विधाएं अपने लिखित रूप में ही अंतिम रूप को पा लेती हैं किन्तु नाटक लिखित रूप में एक आयामी होता है तथा मंचन के पश्चात ही उसमें संपूर्णता आती है।

- नाटक का प्रथम अंग समय का बंधन है। समय का यह बंधन नाटक की रचना पर पूरा असर डालता है, इसीलिए नाटक को एक निश्चित समय सीमा में पूरा होना होता है। नाटक किसी भी काल से संबंध रखता हो उसके मंच निर्देश हमेशा वर्तमानकाल में ही लिखे जाते हैं।

- नाटक का द्वितीय अंग- शब्द है। शब्द को नाटक का शरीर कहा जाता है। नाटक में शब्द अपनी एक नई, निजी और अलग अस्मिता ग्रहण करता है।

- एक अच्छा नाटककार अधिकाधिक संक्षिप्त और सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है। नाटक वर्णित न होकर क्रियात्मक अधिक होना चाहिए। एक अच्छा नाटक वही होता है जो लिखे गए शब्दों से ज्यादा वह ध्वनित करे जो लिखा नहीं गया है।

- एक अच्छे नाटककार को यह कला अवश्य आनी चाहिए कि वह घटना, स्थिति और दृश्य को इस क्रम में रखे कि कथा का विकास शून्य से शिखर की ओर हो।

- संवाद ही वह तत्व है जो एक सशक्त नाटक को एक कमजोर नाटक से अलग करता है।

- नाटक को सशक्त बनाने में चरित्र का विशेष योगदान होता है, इसलिए चरित्र विकास में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पात्र सपाट और सतही न होकर क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने वाले हों।

- जिस नाटक में असंतुष्टि, छटपटाहट प्रतिरोध और अस्वीकार जैसे नकारात्मक तत्वों की जितनी ज्यादा उपस्थिति होगी वह उतना ही सशक्त नाटक साबित होगा।

- नाटक देखते समय दर्शक मानसिक रूप से उस परिवेश में पहुँच जाता है जिससे संबंधित वह नाटक है। ऐसी स्थिति में संवाद स्वाभाविक होने पर उसके मर्म का स्पर्श करते हुए उसे ग्राह्य हो जाते हैं।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अभ्यास-कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. नाटक से आप क्या समझते हैं?
2. नाटक अपने किस रूप में संपूर्णता को प्राप्त करता है?
3. 'नाटक' साहित्य की अन्य विधाओं से कैसे अलग है?
4. 'समय के बंधन' का नाटक में क्या महत्व है?
5. नाटक के मंच निर्देश हमेशा वर्तमान में क्यों घटित होते हैं?
6. नाटक में नकारात्मक तत्वों की उपस्थिति क्यों आवश्यक है?
7. नाटक के मुख्य तत्व कौन-कौन से हैं?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 'नाटक' किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. एक अच्छे नाटक की भाषा-शैली कैसी होनी चाहिए?
3. 'नाटक स्वयं में एक जीवंत माध्यम है।' इस कथन के आलोक में नाटक में स्वीकार और अस्वीकार की धारण स्पष्ट कीजिए।
4. स्पष्ट कीजिए कि "नाटक की कहानी बेशक भूतकाल या भविष्यत्काल से संबंधित हो, तब भी उसे वर्तमान काल में ही घटित होना पड़ता है।"
5. "संवाद चाहे कितनी भी कठिन भाषा में क्यों न लिखे गए हो, स्थिति और परिवेश की मांग के अनुसार यदि वे स्वाभाविक जान पड़ते हैं तो दर्शकों तक पहुंचने में कोई मुश्किल नहीं है।" क्या आप इस बात से सहमत है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कैसे लिखें कहानी

स्मरणीय बिन्दु

- किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध व्यौरा जिसमें परिवेश हो, द्वंद्वात्मकता हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिंदु हो, उसे कहानी कहा जाता है। कहानी जीवन का अविभाज्य अंग है। हर व्यक्ति अपनी बातें दूसरों को सुनाना और दूसरों की बातें सुनना चाहता है। कहानी लिखने का मूलभाव सबमें होता है, इसे कुछ लोग विकसित कर पाते हैं कुछ नहीं।
- जहां तक कहानी के इतिहास का सवाल है, वह उतना ही पुराना है जितना मानव इतिहास, क्योंकि कहानी, मानव स्वभाव और प्रकृति का हिस्सा है। मौखिक कहानी की परंपरा बहुत पुरानी है। प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ अत्यंत लोकप्रिय थी क्योंकि यह संचार का सबसे बड़ा माध्यम थी। धर्म प्रचारकों ने भी अपने सिद्धांत और विचार लोगों तक पहुँचने के लिए कहानी का सहारा लिया था। शिक्षा देने के लिए भी पंचतंत्र जैसी कहानियाँ लिखी गईं जो जगप्रसिद्ध है।
- कहानी का केन्द्रीय बिन्दु कथानक होता है जिसमें प्रारंभ से लेकर अंत तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख होता है। कथानक को कहानी का प्रारंभिक नक्शा माना जा सकता है। कहानी का कथानक आमतौर पर कहानीकार के मन में किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है। कहानीकार कल्पना का विकास करते हुए एक परिवेश, पात्र और समस्या को आकार देता है तथा एक ऐसा काल्पनिक ढांचा तैयार करता है जो कोरी कल्पना न होकर संभावित हो और लेखक के उद्देश्य से मेल खाता हो।
- कहानी में द्वंद्व के तत्व का होना आवश्यक है। द्वंद कथानक को आगे बढ़ता है तथा कहानी में रोचकता बनाए रखता है। कहानी की यह शर्त कि वह नाटकीय ढंग से अपने उद्देश्य को पूर्ण करते हुए समाप्त हो जाए, द्वंद्व के कारण ही पूर्ण होती है।
- हर घटना, पात्र और समस्या का अपना देशकाल और वातावरण होता है। कहानी को रोचक और प्रामाणिक बनाने के लिए आवश्यक है कि लेखक देशकाल और वातावरण का पूरा ध्यान रखें।
- पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्वपूर्ण और बुनियादी शर्त है। कहानीकार के सामने पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट होगा उतनी ही आसानी उसे पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और उनके संवाद लिखने में होगी।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- पात्रों का चरित्र चित्रण पात्रों की अभिरुचियों के माध्यम से, कहानीकार द्वारा गुणों का बखान करके, पात्र के क्रिया-कलापों, संवादों के माध्यम से किया जाता है।
- कहानी में संवाद का विशेष महत्व है। संवाद ही कहानी को और पात्र को स्थापित एवं विकसित करते हैं साथ ही कहानी को गति देते हैं, आगे बढ़ाते हैं, जो घटना या प्रतिक्रिया कहानीकार होती हुई नहीं दिखा सकता, उसे वह संवादों के माध्यम से सामने लाता है।
- कथानक के अनुसार कहानी चरमोत्कर्ष (क्लाइमेक्स) की ओर बढ़ती है। सर्वोत्तम यह है कि चरमोत्कर्ष पाठक को स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करे तथा उसे लगे कि उसे स्वतंत्रता दी गई है, उसने जो निष्कर्ष निकाले हैं वह उसके अपने हैं।
- कहानी लिखने की कला को सिखने का सबसे अच्छा और सीधा रास्ता यह है कि अच्छी कहानियां पढ़ी जाएं और उनका विश्लेषण किया जाए।

अभ्यास-कार्य

लघूत्तरात्क प्रश्न

1. कहानी क्या है?
2. प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ क्यों लोकप्रिय थीं?
3. कहानी का केन्द्र बिन्दु किसे कहते हैं?
4. कथानक क्या है?
5. कहानी को रोचक बनाने में कौन सा तत्व सहायक होता है?
6. कहानी प्रामाणिक बने इसके लिए क्या आवश्यक है?
7. कहानी में संवाद क्यों महत्वपूर्ण हैं?
8. कहानी लिखने की कला को कैसे सीखा जा सकता है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कहानी के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट कीजिए कि प्राचीनकाल में मौखिक कहानियाँ क्यों लोकप्रिय हुईं?
2. 'कहानी का केन्द्र बिन्दु कथानक होता है।' इस कथन पर प्रकाश डालिए।
3. स्पष्ट कीजिए कि संवाद पात्रों के चरित्र को उद्घाटित तो करते ही हैं साथ में कहानी को गति भी देते हैं।
4. सिद्ध कीजिए- 'कहानी को रोचक और प्रामाणिक बनाने में देशकाल और वातावरण का चित्रण अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।'
5. कहानी के विभिन्न तत्वों का विवेचन कीजिए।
6. कहानी में चरमोत्कर्ष का चित्रण अत्यंत सावधानीपूर्वक करना क्यों आवश्यक है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

स्मरणीय बिन्दु

- नए ओर अप्रत्याशित विषयों के बारे में कम से कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है। अप्रत्याशित लेखन का आशय यांत्रिक हस्त कौशल से नहीं अपितु उसका आशय भाषा के सहारे किसी विषय पर विचार करने और उस विचार को व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुगठित रूप में अभिव्यक्त करना है।
- अप्रत्याशित लेखन प्रायः एक चुनौती की तरह लगने लगता है क्योंकि ज्यादातर लोग आत्मनिर्भर होकर लिखित रूप में अभिव्यक्ति का अभ्यास ही नहीं करते। रंटत की बुरी आदत अभ्यास का मौका ही नहीं देती और हम दूसरों द्वारा तैयार की गई सामग्री को ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर देते हैं। मौलिक अभ्यास को बाधित करने वाली यह निर्भरता हमारे अंदर लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित नहीं होने देती।
- लिखने का कोई विशेष फॉर्मूला नहीं होता, परंपरागत विषयों से हटकर लिखने का अभ्यास ही दक्षता दिला सकता है।
- लिखने से पूर्व दो तीन मिनट सोचकर यह विचार कर लें कि किन विचारों को हम विस्तार दे सकते हैं। यह तय कर लेने के पश्चात एक आकर्षक-सी शुरूआत पर विचार करें। बात सिलसिलेवार आगे बढ़े इसकी एक रूपरेखा भी हमारे जेहन में होनी चाहिए। वस्तुतः सुसंबद्धता किसी भी तरह के लेखन का एक बुनियादी नियम है। सुसंबद्धता होने के साथ-साथ सुसंगत होना आवश्यक है। अगर हमारी दो बातें आपस में ही एक-दूसरे का खंडन करती हों, तो यह लेखन और अभिव्यक्ति दोनों का अक्षम्य दोष है।
- सामान्यतः निबंधों या आलेखों/प्रश्नोत्तरों में जहाँ 'मैं' शैली का प्रयोग वर्जित है, वही अप्रत्याशित लेखन में 'मैं' की आवाजाही बेरोकटोक चल सकती है।

अभ्यास कार्य

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से आप क्या समझते हैं?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2. रटंत कुटेव (बुरी लत) क्यों है?
3. रटंत की आदत किस प्रकार मौलिक प्रयास को बाधित करती है?
4. अप्रत्याशित लेखन हेतु ध्यान रखने योग्य किन्हीं दो बातों का उल्लेख कीजिए।
5. लेखन के संदर्भ में 'सुसंबद्ध' और 'सुसंगत' से क्या अभिप्राय है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 'नए और अप्रत्याशित लेखन' से क्या अभिप्राय है? क्या अप्रत्याशित लेखन की कोई विशेष तकनीक (फॉर्मूला) है?
2. 'रटंत' की आदत से क्या अभिप्राय है? इसे कुटेव क्यों कहा गया है?
3. 'नए और अप्रत्याशित' विषयों पर लेखन को किस प्रकार सरल बनाया जा सकता है?

अथवा

'नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के लिए किस प्रकार तैयारी करनी चाहिए?

4. लेखन के संदर्भ में 'सुसंबद्ध' और 'सुसंगत' से क्या अभिप्राय है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com